# फुलवाड़ी

## ( भाग - 2 )

### दोसर कक्षाक मैथिली भाषाक पाठ्यपुस्तक

*(एस०सी०ई०आर०टी०, बिहार, पटना द्वारा विकसित)*
*बिहार स्टेट टेक्स्ट बुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना द्वारा प्रकाशित*

# फुलवाड़ी

## ( भाग - 2 )

### दोसर कक्षाक मैथिली भाषाक पाठ्यपुस्तक

सत्यमेव जयते

(एस०सी०ई०आर०टी०, बिहार, पटना द्वारा विकसित)
बिहार स्टेट टेक्स्ट बुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना द्वारा प्रकाशित

## दिशा बोध सह पाठ्य पुस्तक विकास समन्वय समिति

1. **श्री राजेश भूषण**
   *राज्य परियोजना निदेशक, बिहार शिक्षा परियोजना, पटना*
2. **श्री हसन वारिस**
   *निदेशक (प्रभारी), एस. सी. ई. आर. टी., पटना*
3. **श्री मुखदेव सिंह**
   *क्षेत्रीय शिक्षा उपनिदेशक, तिरहुत प्रमण्डल*
4. **श्री रामेश्वर पाण्डेय,**
   *कार्यक्रम पदाधिकारी, बिहार शिक्षा परियोजना, पटना*
5. **श्री बसंत कुमार**
   *शैक्षिक निबन्धक, बी.टी.बी.सी., पटना*
6. **डा० सैयद अब्दुल मुईन**
   *विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा, एस. सी. ई. आर. टी., पटना*
7. **श्रीमती श्वेता शांडिल्य**
   *शिक्षा विशेषज्ञ, यूनीसेफ, पटना*
8. **डा० ज्ञानदेवमणि त्रिपाठी,** *प्राचार्य*
   *टी. आई. एच. एस., पटना*

## पाठ्य पुस्तक विकास समिति

**लेखक सदस्य –**

1. **डॉ0 वीणाधर झा,** *व्याख्याता*
   *पटना कॉलेजियट स्कूल, पटना– 800 004*
2. **डॉ0 राम नारायण सिंह,** *सहायक शिक्षक*

3. **श्री रघुनाथ प्रसाद**
*बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, कंकड़बाग, पटना -800 020*

4. **श्री विजय**,*सहायकशिक्षक,*
*+2 राजकीय उच्च विद्यालय, कोलहेटा-पटोरी, दरभंगा*

5. **डा0 उपेन्द्र कुमार**, *सहायकशिक्षक*
*+2 उच्च विद्यालय, जयनगर, मधुबनी ।*

**समन्वयक -**

**डा0 अर्चना, व्याख्याता**
*एस. सी. ई. आर. टी., पटना*

**समीक्षक -**

1. **श्री मोहन भारद्वाज**
*साहित्यकार, पटना*

2. **डा0 इन्दिरा झा,**
*विभागाध्यक्ष, मैथिली विभाग, रामकृष्ण द्वारिका महाविद्यालय, पटना- 800 020*

**आभार -**

**यूनिसेफ, पटना**

# आमुख

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक फुलवाड़ी भाग-2 कक्षा दूक छात्रक अवस्थाकेँ ध्यानमे राखि बनाओल गेल अछि। एहि आयु वर्गक छात्रमे नव-नव सोच-विचार लग पासक वस्तु सभकेँ देखि अबैत रहैत छैक। जे देखलक-सुनलक तकरा अपना आयुवर्गक छात्र लोकनिक बीच बँटबाक प्रयास करैत रहैत अछि। अपन मोनमे उठल विचारकेँ दोसरा केँ देबाक उत्कंठा रहैत छैक। एतबय नहि छात्रकेँ पढ़बाक प्रति बेसी जिज्ञासा नहि अपितु विषय वस्तुकेँ जानवाक इच्छा बेसी रहैत छैक। प्रश्न पूछि जानकारी लेबाक उत्सुकताअधिकरहैतछैक। तेँ एहिपाठ्यपुस्तकक निर्माण,बालकक मनोवैज्ञानिक दशाएवं जिज्ञासाक ध्यानमे राखि, कयल गेल अछि।

राष्ट्रीय 'पाठ्यचर्याक रूपरेखा 2005 आ वी० एस० एफ०-2008क सुझावक अनुरूप एहि पुस्तक निर्माण भेल अछि। एहि दृष्टिएँ पाँच पाठ गद्यक आ पाँच पाठ पद्यक राखल गेल अछि। बच्चा सभक बौद्धिक क्षमता आओर रूचिक अनुरूप पाठक चयन कयल अछि। एखन बच्चा सभ मात्र अक्षर, शब्द आछोट-छोटवाक्यनिर्माणकरबसीखिसकलअछि।गीतसुनबबड़बढ़ियाँलगैतछैक। तेँ पाठक आरम्भ पद्यसँ कयल गेल अछि ओहो पाठक रूपमे नहिं अपितु खेल-खेलबाक दृष्टिएँ। जे खेल घर-आँङनमे भाइ-बहीनसँ सीखि नेने होयत। गेयताक कारणेँ छात्रकेँ पढ़बामे रूचि लगतैक।

चित्रात्मक-कथा जे छात्रक बीच सहजहिं आकर्षणक बिन्दु होइछ, तकरा सेहो स्थान देल गेल अछि। जाहिसँ पढ़ब बच्चाकेँ बोझ नहि बुझना जेतैक। एखन धरि शब्दक बहुत रास ज्ञान भय चुकल छैक। शब्दक भंडार आओर बढ़ैक तकरो ध्यानमे राखि शब्दक अंत्याक्षरी सेहो देल गेल अछि, जे खेल-खेलमे बच्चा सभ आपसी ताल-मेलसँ सीखत।

खिड़कीक-खिस्सा जे बंगला भाषाक अनुवादसँ लेल गेल अछि, तकरा समावेश सेहो कयल गेल अछि जाहिसँ बच्चा सभमे मनोवैज्ञानिक विश्लेषणक क्षमता बढ़तैक। आपसी बात-चीत सँ तार्किक शक्ति सेहो बढ़तैक आ तकर अभिव्यक्ति भाषाक माध्यमे हेतैक। भाषिक क्षमतामे स्वतः वृद्धि होयब स्वाभाविक अछि।

एहि पाठ्यपुस्तक में पाँचगोट गद्यक चयन भेल अछि। पर्यावरणकेँ ध्यान मे राखि जंगलक आत्मकथा प्रस्तुत कयल गेल अछि। सांस्कृतिक धरोहर आ तत्जन्य कथा जे हमरा सभक सामाजिक समरसता (फगुआ-पावनि) प्रदान करैत अछि तकरा राखि, बच्चा सभकेँ सामाजिक समरसताक ज्ञान

देबाक प्रयास कयल गेल अछि । मिथिलाक महान विभूति विद्यापतिक जीवनीसँ अवगत कराओल गेल अछि । जे समस्त मिथिलांचले टामे नहि 1अपितु अपन रचनासँ देश-देशान्तर धरि विख्यात भऽ चुकल छथि । एहन महान् पुरुषक जीवनी पढ़ि बच्चा सभमे विशेष उद्बोधन हेतैक ई हमरा विश्वास अछि।

अकबरक दरबारमे जहिना बीरबल अपन वाक्पटुता सँ सभके मंत्रमुग्ध कयने रहैत छल, ताही तरहक वाक्पटु मिथिलामे गोनू झा छलाह, तकर खिस्सा सेहो देल गेल अछि । ई पाठेतर कथा अछि, जकरा बच्चा सभ रुचिपूर्वक पढ़त आ आपसमे चर्चा कय ज्ञानक विस्तार करत ।

प्रश्न ओ अभ्यास पर विशेष ध्यान देल गेल अछि । लिखबासँ बेसी आपसी बातचीत कय बुद्धि विस्तार पर ध्यान देल गेल अछि जाहिसँ छात्रमे भाषिक क्षमताक विकास हेतैक । संगहि सीखबाक प्रवृति बढ़तैक ।

छात्र लोकनिक हेतु पाठान्तमे कठिन शब्दक अर्थ देल गेल अछि जाहिसँ छात्रक शब्द ज्ञान बढ़तैक। छात्रमे शब्दकोशसँ शब्दार्थ चयन कोना कयल जाइत छैक तकर ज्ञान होइक संगहि ओकरा जिज्ञासा ओ प्रवृति बढ़ैक ताहि दृष्टिकेँ ध्यानमे राखि वर्णक्रमानुसार अर्थ किताबक अंत मे देल गेल अछि ।

प्रस्तुत पुस्तक फुलवाड़ी भाग-2क विकासक क्रममे जाहि विद्वान लोकनिक रचना लेल-गेल अछि हुनका प्रति आभार ओ कृतज्ञतार्पण करैत छी ।

ई पुस्तक सुधी समाजक समीक्षकक आगू प्रस्तुत अछि । विशेष प्रयास कयनहुँ त्रुटि होयब स्वाभाविक अछि । त्रुटिसँ अवगत कराय पुस्तककेँ परिमार्जित ओ अधिकाधिक उपादेय बनयवामे सहयोग करी से निवेदन ।

**हसन वारिस**

**निदेशक ( प्रभारी )**

एस० सी० ई० आर० टी०, बिहार, पटना

# विषय सूची


| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | अटकन मटकन | - पाठेतर | 01 - 02 |
| 2. | सीख | - कविता | 03 - 07 |
| 3. | लोकगीत | - पाठेतर | 08 - 10 |
| 4. | जंगलक आत्मकथा | - पर्यावरण | 11 - 15 |
| 5. | चित्रकथा -खिड़कीक जन्म<br>(बंगला भाषासँ अनुवादित) | - पाठेत्तर | 16 - 21 |
| 6. | विद्यापति | - महापुरूषक जीवनी | 22 - 25 |
| 7. | करिया झुम्मरि | - कविता | 26 - 29 |
| 8. | फगुआ<br>(पावनि-तिहार) | - कथा | 30 - 37 |
| 9. | एक गोट आर खिस्सा | - पाठेतर | 38 - 39 |
| 10. | की कहैत अछि | - कविता | 40 - 45 |
| 11. | उकट्ठी वानर | - कथा | 46 - 51 |
| 12. | पाकल आम | - कविता | 52 - 56 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 13. | आउ हमरा लोकनि आब खेलाइ अन्त्याक्षरी | - पाठेतर | 57 - 58 |
| 14. | मेलक बल | - कथा | 59 - 63 |
| 15. | मछरी (स्वास्थ्यवर्द्धक) | - कविता | 64 - 68 |
| 16. | चित्रात्मक कथा (गोनू झाक महींस) | - चित्र कथा | 69 - 74 |
| | शब्द कोश | | 75 - 78 |

# 1

## अटकन-मटकन

अटकन - मटकन
दहिया चटकन
केरा कूरा महागर-जागर,
परनिक पत्ता हिलै डोलै,

माघमास करैला फूलै
तइपर सबहिक ना की ?
आमुन गोटी, जामुन गोटी,
तेतरी सोहाग गोटी !
लएह पुत्ता डामर,
करह गए कामर,
बाँस काटे ठाँइ-ठाँइ
नदी गुगुआय,
कमलक फूल, दुनू
अलगल जाय
सिंगी लेबह की मङ्गुरी ???

# 2

## सीख

अ आ इ ई पढ़ू-लिखू ।
उ सँ उल्लू ऊन सिखू ।।
ए ऐ ओ औ अं अंगूर ।
अज्ञानीक दुःख होएत दूर ।।

क ख ग घ ङ कतार ।
च छ ज झ ञ झंकार ।।
ट ठ ड ढ ण टवर्ग ।
धरती पर आनक अछि स्वर्ग ।।

त थ द ध न नमहर ।
बिनु पढ़ने जयबें किमहर ।।
प फ ब भ म मुस्कान ।
विद्या छीनि सकत ने आन ।।

य र ल व श शुभ काज ।
अनपढ़ लेल नहि नीक समाज ।।
ष स ह क्ष हकार ।
बुड़िबक बौआ लगैछ बेकार ।।

उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास'

# प्रश्न ओ अभ्यास

## 1. कवितासँ

1. पाठमे आयल देवनागरी लिपिक वर्णकँ लिखू ।
2. पाठमे अ वर्णसँ बनल शब्दकँ ताकिकय लिखू ।
3. कतार शब्दमे कोन कोन वर्ण अछि ?
4. पाठमे एकटा शब्द आयल अछि नमहर, एहिसँ मिलैत-जुलैत दोसर शब्द लिखू ।

## 2. शब्द बनाउ

| | |
|---|---|
| **च -** | **चपल, चंचल, चरण, चाकर, चरब** |
| **प -** | ................................................. |
| **ट -** | ................................................. |
| **द -** | ................................................. |
| **ग -** | ................................................. |

**3. नीचाँक तालिकासँ शब्द बनाउ**

**जेना - प र व ल - परवल ।**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| प | च | म | य | स |
| र | ल | ध | ब | द |
| व | झ | न | ह | ज |
| ग | ट | घ | फ | थ |
| क | छ | ड | झ | अ |

**4. नीचाँ देल गेल शब्दक वर्णकेँ अलग-अलग कय-कय लिखू**

नमहर - न + म + ह + र

अनपढ़ - ............................................

कतार - ............................................

झंकार - ............................................

काज - ............................................

अंगूर - ............................................

5. **भाषा अध्ययन**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क | ख | ग | घ | ङ | – कवर्ग कहाइत अछि । |
| च | छ | ज | झ | ञ | – चवर्ग कहाइत अछि । |
| ट | ठ | ड | ढ | ण | – टवर्ग कहाइत अछि । |
| त | थ | द | ध | न | – तवर्ग कहाइत अछि । |
| प | फ | ब | भ | म | – पवर्ग कहाइत अछि । |
| क्ष | त्र | ज्ञ | | | – संयुक्ताक्षर कहाइत अछि। |
| ङ | ञ | ण | न | म | – आनुनासिक वर्ण कहाइत अछि। |

## माने जानू

अज्ञानी – जकरा ज्ञान नहि होइक ।

आन – दोसर

अनपढ़ – बिना पढ़ल

# 3

## लोक गीत

पानि एलइ–बुनी एलइ ।
कउआ के जमाय एलइ ।।
डाला–डुली घर करी ।
बेटी केँ बिदा करी ।।

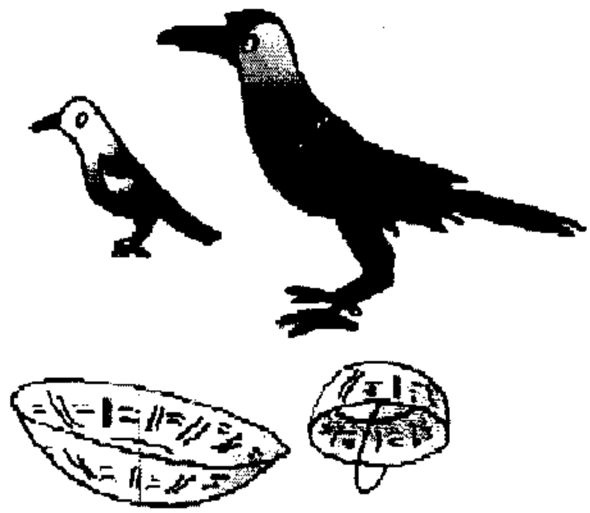

मयना दीदी गाबथि गीत ।
समय सोहाओन नीक थीक ।।
सीता माता केलनि विचार ।
राम देथिन सोनक हार ।।

बगरा रानी उरि कय एली ।
परबा दादी ततपर भेली ।।
फुद्दी काकी देल आशीष ।
दूध खाइ ले गाय, महीस ।।

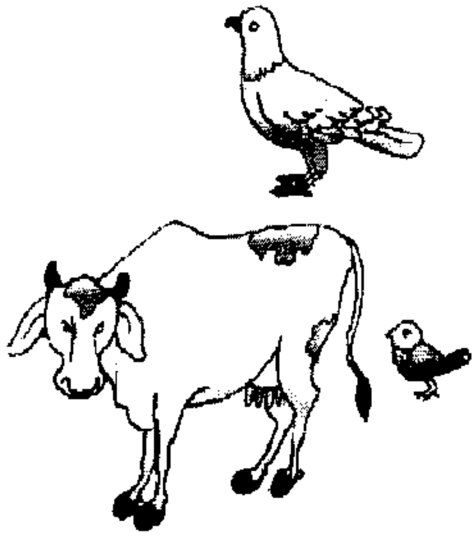

– मैथिलीपुत्र 'प्रदीप'

## प्रश्न ओ अभ्यास

**1. सही जोड़ाक मिलान करू**

| | |
|---|---|
| पानि | जमाय |
| दूध | बुन्नी |
| सीता | डुलि |
| डाला | माता |
| बेटी | गाय |

**2. वाक्य बनाउ**

जमाय ..........................................

बिदा ..........................................

हार ..............................................

गीत ..............................................

3. **खाली जगहकेँ भरू**

........................ एलइ ........................... एलइ ।

कउआ के ........................................... एलइ ॥

.................................................... घर करी ।

बेटीकेँ ............................................... करी ॥

एहि कवितामे कोन-कोन पक्षीक नाम अछि, लिखू

.......................................................................

पाँच गोट एहन जानवरक नाम लिखू जकरा दूध होइत छैक।

.......................................................................

लग-पासक दस गोट चिड़इक नाम लिखू

.......................................................................

.......................................................................

**माने जानू**

बुन्नी – वर्षाक छोट-छोट बुन्द ।

आशीष – आशीर्वाद

जमाय – बेटीक पति

# 4

## जंगलक आत्मकथा

हम जंगल छी । हमरा आङनमे सभ तरहक गाछ-वृक्ष, पशु-पक्षी रहैत अछि । शेर, बाघ, चीता, हरिण, बानर, नील गाय, जंगली भैंसा, मोर, मैना, अजगर आदि रहैत अछि । मोरक नाच देखबामे बहुत सुन्दर लगैत अछि । ऋषि-मुनि लोकनि तपस्या करबा लेल हमरे आङनमे अबैत छथि । रंग-बिरंगक हरियर-हरियर पात आ फूल हमर शोभा बढ़ा दैत अछि, मुदा जखन पात खसि पड़ैत अछि तखन हमर शोभा घटि जाइत अछि। हम सभ तरहक जीवनकेँ अपन सेवाक लाभ दैत छियनि।

अनेक तरहक फल-फूल हमरेसँ भेटैत अछि । बीमारी दूर करबाक लेल जड़ी-बूटी आ, पूजाक वास्ते चानन, धूप हमही दैत छी। भोजनक मशाला-जीर, मरीच, इलाइची, दालचीनी आदि- हमहीं दैत छियनि। समाजकेँ जनमसँ मृत्यु धरि, सभ प्रकारक छोटसँ पैघ वस्तु हमरेसँ भेटैत अछि । लिखबाक हेतु कलम, घर बनैबाक हेतु खिड़की केबारी, खेलैबाक हेतु बैट-बल्ला हमहीं दैत छियनि । एतेक धरि जे शुद्ध हवा जकरासँ मनुक्ख स्वस्थ रहैत अछि हमहीं दैत छी ।

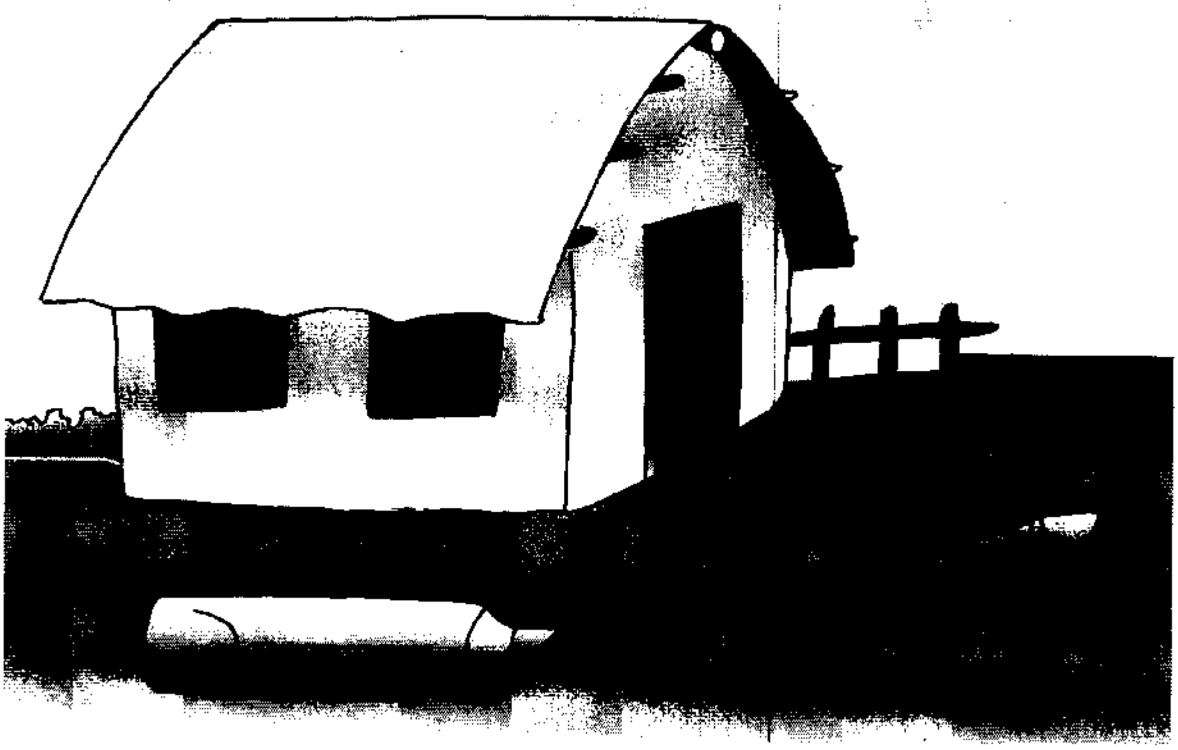

परन्तु आब नीक-नीक लोकनि हमरा काटि रहल छथि, हमरा उजारि रहल छथि। नव-नव रंगक पैघ-पैघ घर बना रहल छथि। कल-कारखाना बना रहल छथि । जाहिसँ हमर आङनक जीव-जन्तु दुखी भय' रहल अछि। सभक संख्या दिन-प्रतिदिन कमि रहल अछि। जँ मनुक्खक ई चालि रहि

गेलनि तँ अकाल आ बाढ़िसँ कखनो छुटकारा नहि भेटत । हमर सभ तरहक सुख-सुविधा समाप्त भय' जायत । तँ आब हमरा लोकनि निश्चिय करी जे हम अहाँक रक्षा करब आ अहाँ हमर।

-मदन मोहन चौधरी

## प्रश्न ओ अभ्यास

**1. पाठसँ**

1. जंगलमे पाओल जायवला कोनो पाँच हिंसक पशुक नाम लिखू ।
2. घर बनयबामे कोन-कोन लकड़ीक उपयोग होइत अछि ?
3. जंगल हमरा लोकनिकेँ आर कोन-कोन तरहेँ लाभ दैत अछि? विचार करू।

4. कल-कारखानासँ हमरा लोकनिकेँ कोन-कोन तरहक हानि भय रहल अछि?

## 2. पहिने की भेल, तकरा बाद की भेल

1. कल-कारखाना बनय लागल । ☐
2. गाछ-वृक्ष कटय लागल । ☐
3. जीव-जन्तु दुखी होमय लागल । ☐
4. जंगली जानवरक सुख-सुविधामे कमी भय जायत । ☐

## 3. की होइत जँ

1. गाछ-वृक्ष नहि काटल जाइत ।
2. कल-कारखाना कम बनैत ।
3. अकाल नहि पड़ैत ।
4. स्वस्थ हवा नहि भेटैत ।

## 4. आपसमे मिलि-जुलिकय करू

1. कोनो पाँच वृक्षक नाम लिखू जाहिसँ घर बनयबामे सुविधा होइत छैक।
2. तुलसी पातकेँ हमसभ कोन तरहेँ व्यवहार करैत छी ?
3. कोनो पाँच खेलक नाम लिखू जाहिमे लकड़ी व्यवहार कयल जाइत हो।
4. घरक आस-पास पाओल जायवला कोनो पाँच गाछक नाम कहू ।
5. कोनो पाँच गोट एहन गाछक नाम लिखू जे दवाइक रूपमे व्यवहार कयल जाइत हो।

## 5. विचार करू

1. साधारण लोक गाछक कोना-कोना उपयोग करैत अछि ?
2. धनिक लोक कोन-कोन तरहेँ गाछक उपयोग करैत अछि ?
3. हरियर-हरियर, पीयर-पीयर एहने चारि टा आर शब्द बना कय लिखू ।
4. पाठमेसँ 'पशु-पक्षी' एहन शब्द चुनि कय लिखू ।
5. कोनो तीन टा खेलक नाम लिखू जाहिमे लकड़ीक समानक उपयोग कयल जाइत हो ।

## माने जानू

जंगल - जाहि ठाम गाछ-वृक्ष अनगिनत रहय

तपस्या - विशेष उद्देश्यक प्राप्ति लेल तल्लीन होयब

शोभा - सुन्दर ।

मनुक्ख - लोक

अकाल - पानि नहि भेला परक स्थिति ।

कल-कारखाना - एहन घर जाहिमे विभिन्न प्रकारक मशीन रहैक आ उत्पादन होइक ।

उजारब - नोचि-नाचि कय फेकब ।

# 5

## चित्र कथा

### खिड़कीक जन्म

राजा बजलाह सभा करबाक लेल बहुत पैघ घर बनाऊ।

मंत्री– बहुत सुन्दर घर बनिकय तैयार भयगेल।

सभाक तैयारी भेल- राजा, मंत्री, सभासद, आबि गेलाह।

सभागारमे अन्हार छल, राजा कहलनि-इजोत कहाँ अछि?

मंत्री, सभासद सभगोटे घरसँ मुट्ठीमे अन्हारकेँ बान्हि बाहर निकालय लगलाह आ इजोतकेँ मुट्ठीमे बान्हि सभागारमे आनय लगलाह।

राजा- पुनः इजोत नहि भेल।

मंत्री – सरकार! मुट्ठीमेसँ अन्हार आ इजोत सभ चूबि गेल।

मंत्री- छतकेँ हटा देल जाय तँ इजोते-इजोत भय जायत।
राजा- हँ, ठीक कहलहुँ।

छत विहीन सभागारमे सभा होमय लागल । ताबते मूसलाधार बरखा भय गेल आ सभ गोटे भीजि गेलाह।

राजा मंत्री पर खिसिया गेलाह। बजलाह– ई की भेल ?

सभासद डेराइत बजलाह– सरकार बरखा समयमे छत देवाल पर राखि देबैक आ घरमे डिबिया लेसि देल जायत। राजा– हँ, ठीक कहलहुँ, एहिना कयल जाय।

मंत्रीकेँ ई बात नीक नहि लगलनि। मंत्री- हवामे डिबिया मिझा जायत, तहन ?

सभासद- बरखादिन छुट्टी राखल जाय। राजा- सोलहो आना ठीक कहलहुँ। छुट्टी होइत रहत आ काजो चलैत रहत।

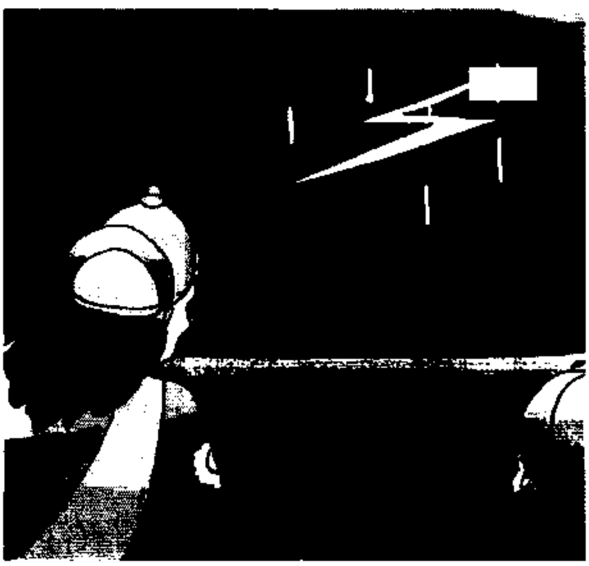

राजा सभागारमे बैसल रहथि। देवाल दिस तकैत। मेघ लागल रहय। बिजुली चमकि उठल। देवालक फाँक दयकय भक दय इजोत आबि गेल ।

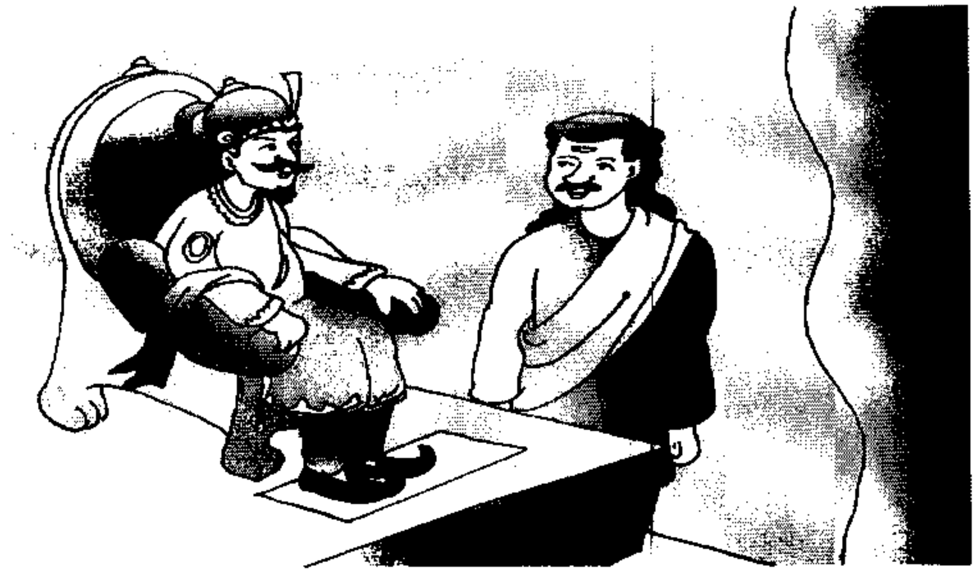

राजा खूब प्रसन्न भेलाह, बजलाह- मंत्रीजी उपाय तऽ भेटि गेल। मंत्री- अवाक् भय गेलाह, पुछलनि -

कथिक उपाय सरकार ?
राजा- वैह इजोतक ।

राजा- देवालमेसँ किछु ईंटाकेँ हटा दिऔक। कतहु- कतहु भूर बना दिऔक। भरि इच्छा इजोत आबय लागत। हवा सेहो आबय लागत । खिड़कीक जन्म ताही दिनसँ भेल।

# 6

# विद्यापति

मधुबनी जिलामे बिसफी नामक एकटा गाम अछि । ओहि गाममे गणपति ठाकुर नामक एक पंडित छलाह । हुनका एक पुत्र भेलनि । ओहि बालकक नाम विद्यापति राखल गेल । विद्यापति संस्कृत पढ़ि नीक पंडित भेलाह। ओ बड़ पैघ कवि भेलाह।

ताहि दिन संस्कृतक विद्वान् संस्कृतहिमे श्लोक बनाबथि । मातृभाषामे कविता लिखबाक चलनि नहि छलैक । विद्यापति मातृभाषामे बहुत रास गीत बनाओल ।

ओ विचार कयलनि जे संस्कृत केवल पंडित बुझताह । तेहन भाषामे कविता बनाबी जे सभ बुझय।

हुनक गीत बड़ प्रचलित अछि । मिथिलामे विद्यापतिक गीतक दू चारि पाँती सभ गोटे जनैत छथि। स्त्रिगणकेँ हुनक गीत बड़ प्रिय । महादेवक ओ बड़ पैघ भक्त छलाह।

महराज शिवसिंह हुनका बड़ मानथिन । शिवसिंहकेँ गद्दी भेटलनि। बिसफी गाम विद्यापतिकेँ देलथिन ।

विद्यापति मैथिली भाषामे गीत बनाओल । बंगालहुमे हुनक गीत लोक गबैत अछि । विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर हिनक गीतसँ प्रभावित भेलनि आ टैगोर साहेब ''भानुसिंहेर पदावली'' नामक पोथी लिखि देलनि ।

हुनक मृत्युक सम्बन्धमे कहल जाइत अछि -

कातिक धबल त्रयोदशी जान

विद्यापतिक आयु अवसान ।

हुनक मृत्यु कातिकक इजोरिआक त्रयोदशीकेँ भेलनि । ओहि तिथिकेँ मिथिले टामे नहि, देश-विदेशमे विद्यापति पर्व बड़ धूम-धामसँ मनाओल जाइत अछि ।

- इन्द्रकान्त झा

## प्रश्न ओ अभ्यास

**1. प्रश्नक उत्तर दिअ**

1. विद्यापतिक जन्म कतय भेलनि ?
2. विद्यापति मातृभाषामे किएक गीत बनौलनि ?
3. विद्यापतिकेँ लोक बंगाली किएक कहैत छल ?
4. विद्यापतिकेँ मृत्यु कहिआ भेलनि ?

**2. मिलान करू**

1. विद्यापति मधुबनी
2. विसफी गणपति ठाकुर

3. महादेव पंडित
4. संस्कृत भक्त

## 3. पहिने की भेल तकर बाद की भेल

1. विद्यापति पर्व बड़ धूम-धामसँ मनाओल जाइत अछि । ☐
2. महादेवक पैघ भक्त छलाह । ☐
3. स्त्रिगणकेँ हुनक गीत बड़ प्रिय । ☐
4. महाराज शिवसिंह हुनका बड़ मानथिन । ☐
5. मधुबनी जिलाक विसफी गाममे विद्यापतिक जन्म भेलनि । ☐

## 4. खाली जगहकेँ भरू

1. विद्यापतिक जन्म ........................... मे भेल । (दरभंगा, मधुबनी)
2. हिनक पिताक नाम .......... छल । (गणपति ठाकुर, महादेव ठाकुर)
3. देश विदेशमे ............... पर्व बड़ धूम-धामसँ मनाओल जाइत अछि (विद्यापति, फगुआ)

## 5. विचार करू

विद्यापतिक बादक तीन गोट आओर कविक नाम बताउ ।

विद्यापति आओर शिव सिंह कोन तरहेँ सम्बन्धित छलाह ।

विद्यापतिक गीतक चारि पाँती छात्रसँ सस्वर गवाओल जाय।

# माने जानू

| | | |
|---|---|---|
| पंडित | – | विद्वान् |
| मातृभाषा | – | मायक भाषा |
| प्रचलित | – | चलनसारि |
| पैघ | – | नमहर |
| भक्त | – | भक्ति कयनिहार |
| धवल | – | इजोरिया, उज्जर |
| अवसान | – | मृत्यु |

# 7

## करिया झुम्मरि

करिया झुम्मरि खेलै छी
ढील पटापट मारै छी
लीख पटापट मारै छी
शोणित पीबै जे मनुक्खकेँ
तकरे मारै जारै छी

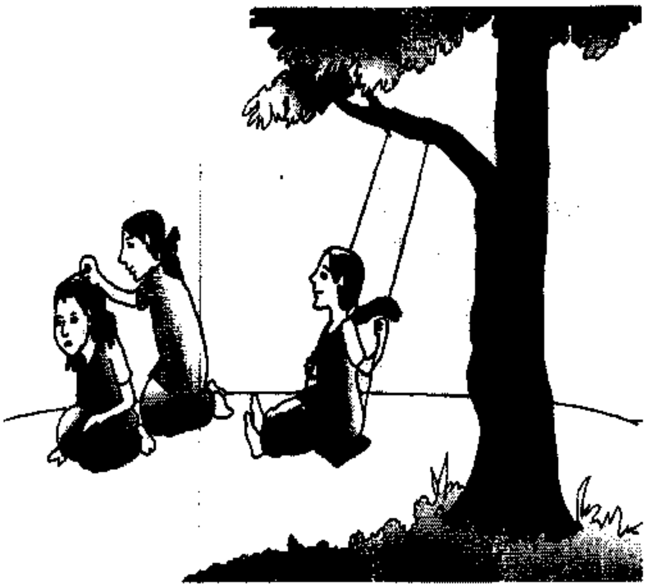

एक्के धरती सभतरि बहिना
बाँटल कहाँ अकाश छइ
एक्के बहै बसात छै
भेद-भाव केँ बात करै जे
तकरे मारै जारै छी

ईर्षा- द्वेष कटाबै छी
घृणा विभेद मेटाबै छी
बुद्धि विवेकक दीप लेसि हम
प्रेमक ज्योति पसारै छी
करिया झुम्मरि खेलै छी

- रामलोचन ठाकुर

## प्रश्न ओ अभ्यास

**1. नीचाँ किछु शब्दक अक्षरकेँ उनटा-पुनटा कय लिखल गेल अछि। ओकरा सजाकय सही शब्द लिखू**

रि या क ..........................................

त णि शो ..........................................

रि म्म झु ..........................................

का श अ ..........................................

**2. नीचाँ लिखल कोन रंगकेँ होइत अछि**

....................................कौआ ....................................गुलाब

....................................भाँटा ....................................रसगुल्ला

....................................जामुन ....................................आकाश

....................................महींस ....................................साग

....................................समतोला ....................................माटि

**3. खाली जगहकेँ भरू**

ईर्षा ............. कटाबै छी

घृणा ............. मेटाबै छी

बुद्धि............. दीप लेसि हम

............. ज्योति पसारै छी

करिया ............. खेलै छी

**4. छात्र लोकनि आपसमे मिलि-जुलि एहन कीड़ा/जन्तुक नाम लिखथि जे मनुक्खक खून पीबैत हो**

______________________________

______________________________

______________________________

______________________________

**5. नीचाँ लिखल शब्दक बदलामे दोसर शब्द लिखू**

| | | | |
|---|---|---|---|
| बसात | – | अकाश | – |
| धरती | – | मनुक्ख | – |
| दीप | – | ज्योति | – |

**6. नीचाँ लिखल शब्दकेँ छोट सँ पैघक क्रम में लिखू**

ढील, मच्छर, लीख, जोंक, उड़ीस

# माने जानू

| | | |
|---|---|---|
| झुम्मरि | – | 'झूमरि' |
| शोणित | – | रक्त, खून |
| घृणा | – | खराब दृष्टिसँ देखब |
| ईर्षा | – | डाह |
| द्वेष | – | दुश्मनी |
| लेसब | – | जरायब |

# 8

## फगुआ

किसुन स्कूलसँ अबिते बाजल–माय, हमरा किछु पाइ दिअ। हम दोकानसँ रंग अबीर आ पिचकारी कीनब । माय कहलखिन – बेटा एखन फगुआक दू दिन बाँकी छैक। की अहाँ एखनेसँ फगुआ खेलायब?

किसुन मायसँ पुछलक – आइए खेलायब तऽ की हेतैक? माय कहलखिन – फगुआ– फागुनमासक पूर्णिमाक अगिला दिन मानाओल जाइत अछि । पूर्णिमाक रातिमे होलिका दहन होइत छैक । किसुनकेँ जिज्ञासा भेलैक आ पुनः प्रश्न पुछलक– होलिका दहन की होइत छैक? माय कहलखिन – एकरा पाछू एकटा पौराणिक कथा छैक। पुनः किसुन कहलक – ओ कथा हमरा सुनाउ ।

हिरण्यकश्यप नामक एक टा बहुत शक्तिशाली राक्षस छल। ओ राक्षस विष्णुक पैघ दुश्मन छल । हिरण्यकश्यपक एकमात्र पुत्र प्रह्लाद छल । प्रह्लाद विष्णुक पैघ भक्त रहय । अपन पुत्र विष्णुक भक्तकेँ जानसँ मारय वास्ते बहुत यत्न कयलक । अन्तमे हिरण्यकश्यप अपन बहीन होलिकाकेँ कहलक। होलिकाकेँ वरदान वाला चादरि रहैक। ओ अपन कोरामे प्रह्लादकेँ लय कय

चादर ओढ़ि बैसि गेलि । आगि जराओल गेल। संयोगवश बहुत तेज बिहाड़ि। होलिकाक देह परक चादरि प्रह्लादक देह पर आबि गेल । प्रह्लाद सकुशल रहल आ होलिका जरि गेलीह । एहि अवसर पर प्रतिवर्ष होलिका दहन मानाओल जाइत अछि । ओकरे खुशीमे होली खेलल जाइत अछि । प्रातः कालमे रंग खेलल जाइत अछि । सभ गोटे अपनासँ पैघकेँ पयर पर अबीर राखि अशीर्वाद लैत छथि । एहि तरहेँ होली अधलाह पर नीकक विजय पर्व थिक ।

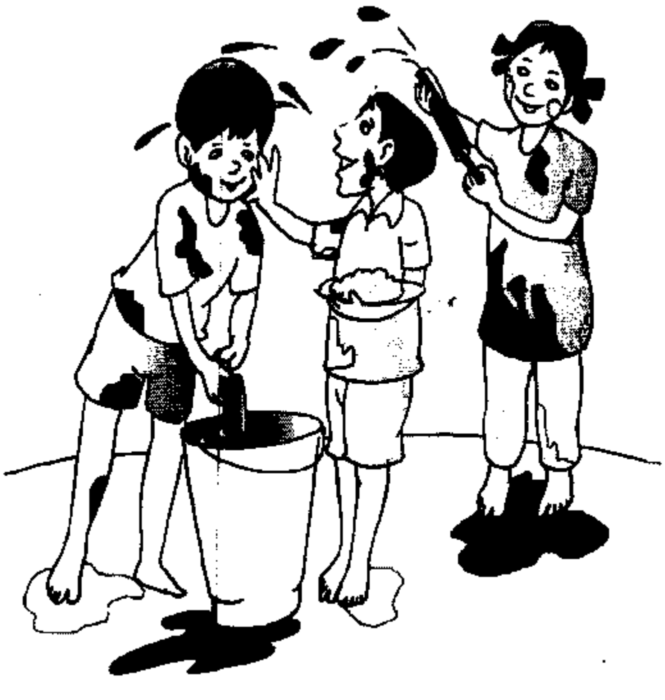

एहि दिन नीक-नीक भोजन बनैत अछि । गरीब धनिक सभ गोटे खीर-पूड़ी, मालपूआ खाइत छथि । एक दोसराकेँ रंग- अबीर लगबैत छथि। किसुन पुनः मायसँ पूछलनि - भाईजी, जखन ओझाकेँ रंग-विरंगक रंग लगबैत रहथिन त' ओझा बिगड़ि किएक गेलखिन ? माय नहि बुझलहिन! ओहि रंगमे लाल-पीयर कारी रंगक पेंट रहैक । पेंट स्वास्थ्यक लेल

हानिकारक होइत छैक । हमसभ ढोलक-झालि बजाकय होरी आ जोगिरा गबैत छी । एहि दिन हमरा सभक बीच गरीब-धनिक, छोट-पैघ, सभ तरहक भेद-भाव समाप्त भय जाइत अछि ।

- [redacted]

## प्रश्न ओ अभ्यास

**1. एहि प्रश्नक उत्तर दिअ**

(क) फगुआ कहिआ मनाओल जाइत अछि ?

(ख) प्रह्लाद किनक पैघ भक्त छलाह ?

(ग) आगिमे के जरि गेलि ?

(घ) फगुआ कथिक पावनि अछि ?

**2. तुक मिलाऊ जेना मेल-जोल**

| | |
|---|---|
| थाल | धाम |
| धूम | कादो |
| खीर | अबीर |
| रंग | पूड़ी |

**3. वाक्य बनाऊ**

पिचकारी.................................................................

पूर्णिमा .................................................................

झालि .................................................................

जोगिरा.................................................................

**4. जाहि रंगक नाम लिखल अछि ओही रंगसँ चौखानाकेँ रंगू**

| | | | |
|---|---|---|---|
| लाल | | बैगनी | |
| पीयर | | नारंगी | |
| हरियर | | नीला | |

**5. अहाँ फगुआ कोना मनबैत छी । एहि पर पाँच वाक्य लिखू**

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

**6. नीचाँ लिखल गेल अक्षरसँ शुरु होबयवाला रंगक नाम लिखू**

ला ...............

बै ...............

आ ...............

पी ...............

नी ...............

गु ...............

ह ...............

ना ...............

**7. फगुआ अबिते अहाँकेँ की-की फुराइत अछि ? लिखू**

वर्गमे फगुआक गीत समूहमे गाउ ।

**8. नीचाँ देल गेल चित्र सभकेँ रंगू**

फुटबॉल

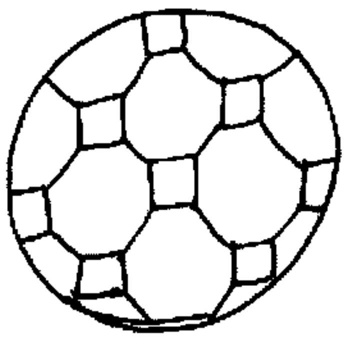

पतंग

तितली

फूल

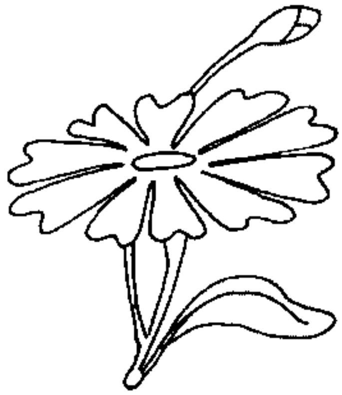

**9. खाली जगहकेँ भरू**

(क) आइ फगुआक ................................ अछि । (मिट्टी/छुट्टी)

(ख) किसुन बहुत ................................ अछि । (कुशल/खुश)

(ग) हम नवका ................................ पहिरब । (चादर/कपड़ा)

(घ) हम ................................ खायब । (खटाई/मिठाई)

## माने जानू

| | | |
|---|---|---|
| पौराणिक | – | पुराण संबंधी, |
| शक्तिशाली | – | ताकतवर |
| प्रज्ज्वलित | – | नीक जकाँ पजरल, धधकैत |
| दहन | – | जरब |
| जिज्ञासा | – | जनबाक इच्छा |
| यत्न | – | प्रयास |
| प्रात:काल | – | परात भेने, दोसर दिन |
| प्रति वर्ष | – | सभ साल |
| अधलाह | – | खराब |

# 9

## एक गोट आर खिस्सा

एक गोट नढ़िया छल । ओकरा बहुत दिनसँ स्वादिष्ट भोजन नहि भेटल छलैक। एक टा गाछ पर कौआ बैसल छल, मुँहमे स्वादिष्ट मासुक एक टा

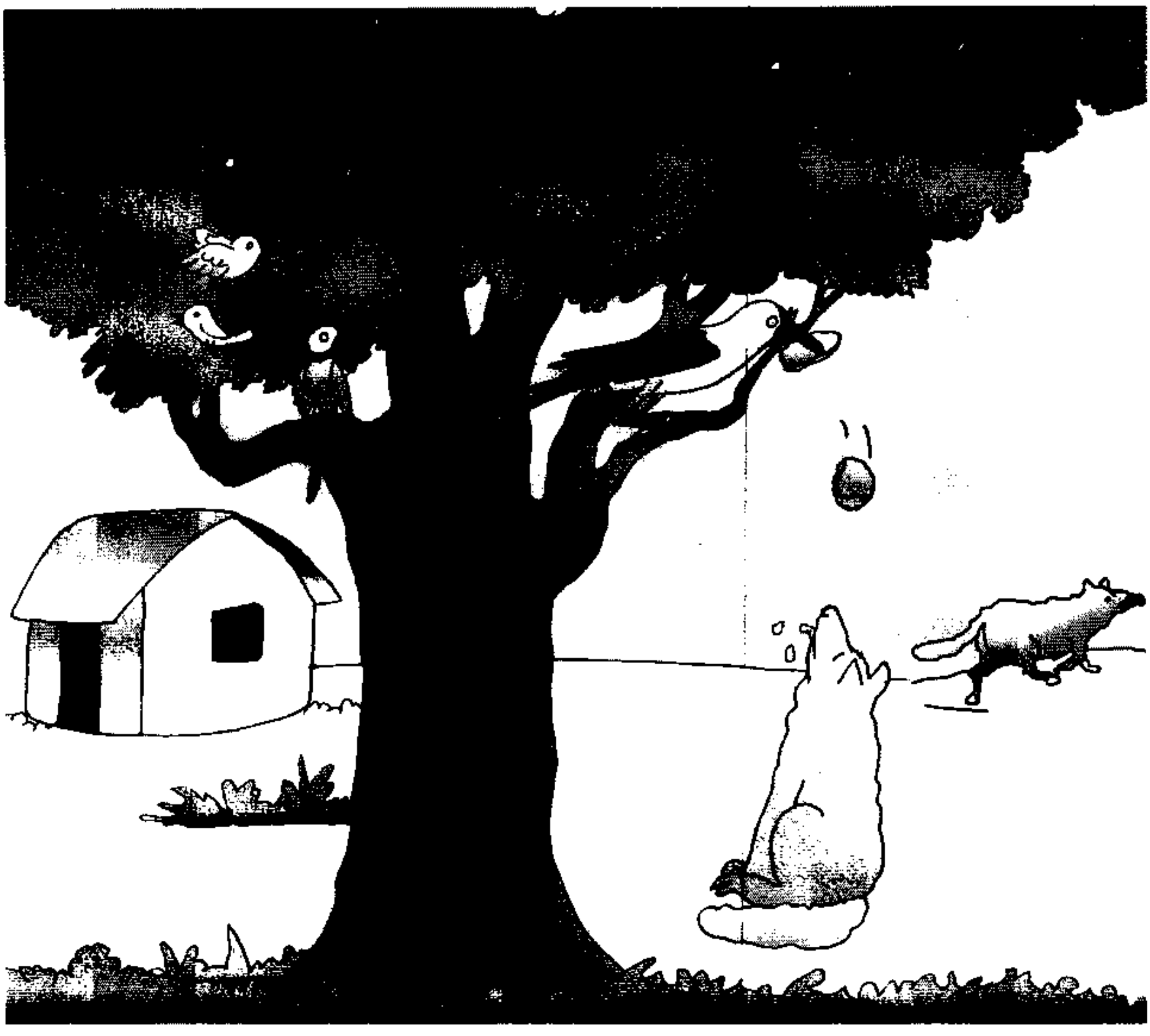

पैघ कुटिया (टुकड़ा) नेने। एम्हर–ओम्हर तकैत रहय । गाछक नीचाँक नढ़िया ओहि कौआकेँ देखलक । स्वादिष्ट मासुक कुटिया देखि नढ़ियाक मुँहमे पानि आबि गेल । चलाक नढ़िया कौआक प्रशंसा करय लागल ।

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

खिस्साकेँ अपना मोनसँ आगू बढ़ाउ ।

एहि खिस्साकेँ कोनो उपयुक्त नाम दिअ ।

# 10

## की कहैत अछि ?

कू-कू कए कोइली कहैत अछि,
मधुर वचन बाजू सब काल ।
सूर्य कहै छथि चमकू जगमे
ऊँच करू निज देशक भाल ।
झूमि-झूमि कए फूल मनोहर,
अछि कहैत सदिखन मुसकाउ ।
बदरी हो अथवा बिहाड़ि हो,
मुदा अहाँ मनमे न डराउ ।।
घड़ी कहल टिक-टिक कय सदिखन,
अपन समय नहि व्यर्थ बिताउ ।
सन्त कहथि - जे विश्व बनाओल
तनिका नहि कखनहु बिसराउ ।।

- शिशु साहित्य

# प्रश्न ओ अभ्यास

**1. पहिने की भेल, फेर की-की भेल**

अपन समय नहि व्यर्थ बिताउ । ☐

ऊँच करू निज देशक भाल । ☐

सूर्य कहैत अछि चमकू जगमे । ☐

कू-कू कय कोइली कहैत अछि । ☐

**2. खाली जगहकेँ भरू**

कू-कू कय ................ कहैत अछि,

मधुर ................ बाजू सब काल ।

सूर्य कहै छथि चमकू ................,

ऊँच करू निज ................ भाल ।

**3. नीचाँ लिखल शब्दसँ वाक्य बनाउ**

वचन ..................................................

व्यर्थ ..................................................

मुसकाउ ..................................................

मनोहर ..................................................

**4. शब्दक खेल**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ता | ज | म | ह | ल |

एहिसँ छह गोट शब्द बनल अछि ।

ताज, महल, जम, हल, ताल, मल

**5. नीचाँ लिखल अक्षरसँ उपरे जकाँ नव-नव आठ शब्द बनाउ**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क | म | ल | क | क | ड़ी |

**6. घड़ीक चित्र बनाउ**

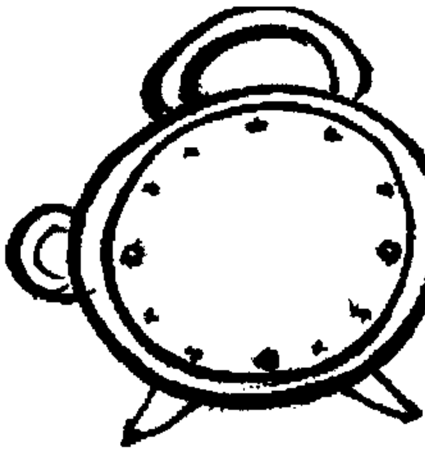

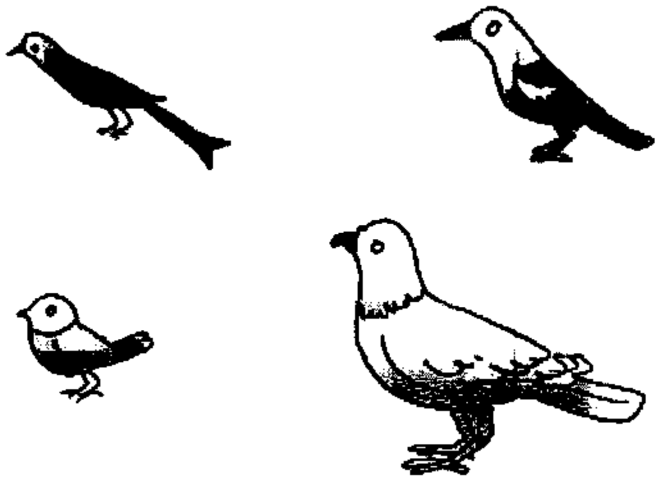

कोइली, सूगा, कबूतर चिड़िया अछि ।

**7. नीचाँ लिखल शब्द की कहबैत अछि ?**

नाम

कोबी, आलू, भिंडी .................................................

नारंगी, केरा, सेब .................................................

गाय, हाथी, कुकुर .................................................

मूँग, बूट, राहरि .................................................

**8. छात्र लोकनि आपसमे सहयोग कय नीचाँ लिखल जीव/वस्तुक बोली लिखथि**

कोइलीक - बिलारिक -

कौआक - कुकुरक -

घड़ीक -

9. एहि चित्रकेँ चीन्हू आ फोटोक नीचाँमे नाम लिखू

कोइली

सूर्य

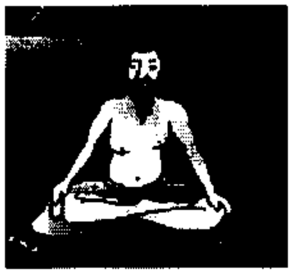

फूल

साधु

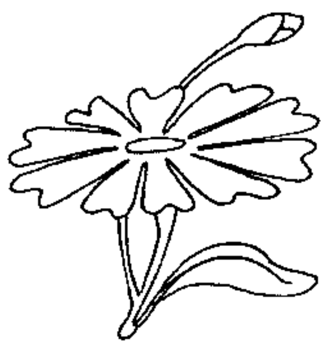

# माने जानू

| | | |
|---|---|---|
| वचन | – | बोली |
| जग | – | संसार |
| भाल | – | माथक अगिलका भाग, कपार |
| मनोहर | – | सुन्दर |
| निज | – | अपन |
| व्यर्थ | – | बेकार |
| विश्व | – | संसार |

# 11

## उकट्ठी वानर

किछु अरकसिया एकटा गाछीमे लकड़ी चीड़ैत रहय । जखनि दुपहरिया भय गेलै तँ ओ सभ चीरल अंशक फाँकमे किल्ली ठोकि खयबा-पीबाक हेतु जाइत गेल । गाछ सभ पर वानर सभक राज छल। एक तँ वानरे उकट्ठी-जाति!

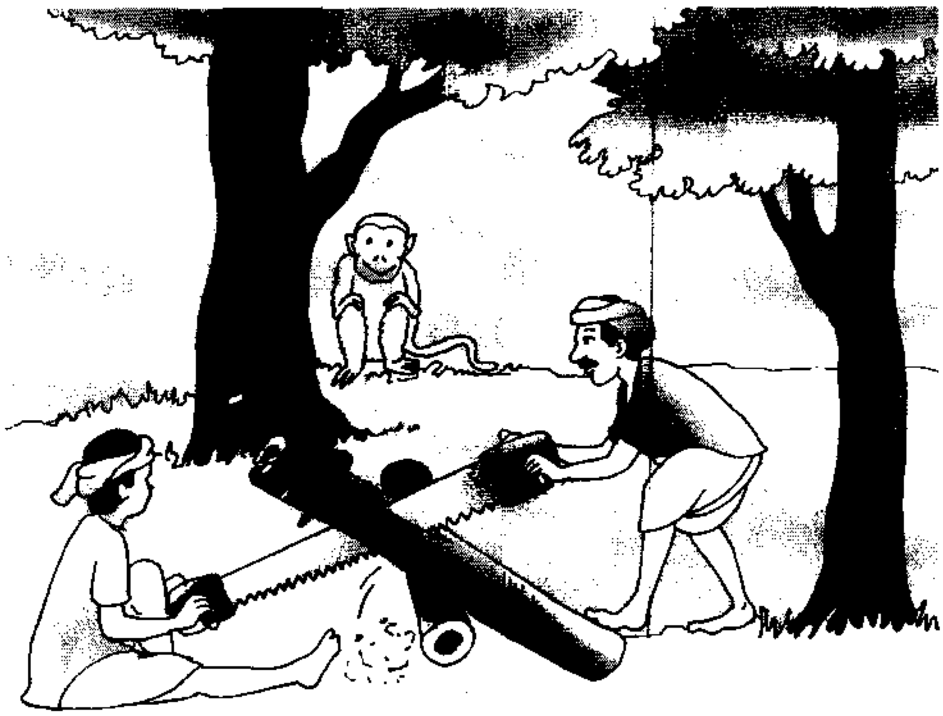

दोसर ओहिमे एक-गोट वानर सभ उकट्ठीक सरदार छल । जँ कि अरकसिया सभ अढ़ भेल कि वनरबा उतरि-पुतरिकेँ लकड़ी पर सबार भय गेल आ' जोर-तोरसँ किल्ली उपारय लागल । बड़ी काल धरि अपस्याँत रहल ।

किल्ली उपरि गेलैक मुदा वानर महाराजक नाङरि फाँकमे सन्हिया गेल ।

आ किल्ली उपरितहिं नाङरि फाँकमे कसा गेल । बेचारे लाख छटपटयलाह मुदा नाङरि तावत धरि नहि बहरायल जावत कि अरकसिया सभ आबि अपन

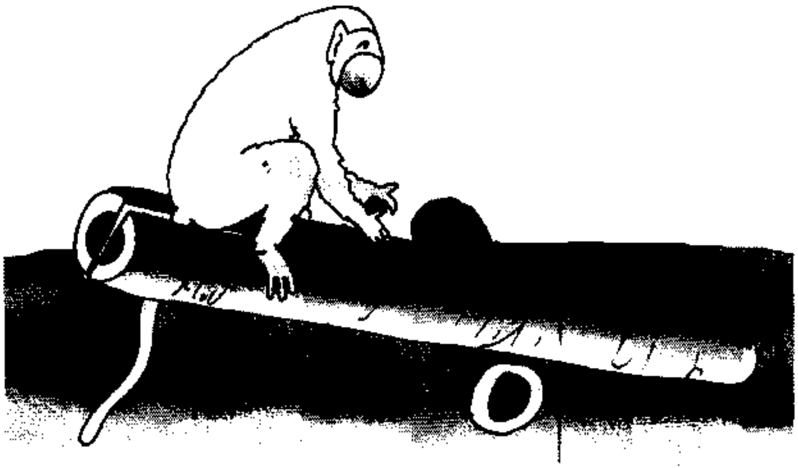

बसुलासँ हुनकर पुछरी नहि छपटि लेलक। नाङरि कटाकेँ वानर एतबा धरि अवश्य सिखलक जे उकठपनाक की फल होइत छैक । अनधिकार –चेष्टा घातक भेल करैत छैक ।

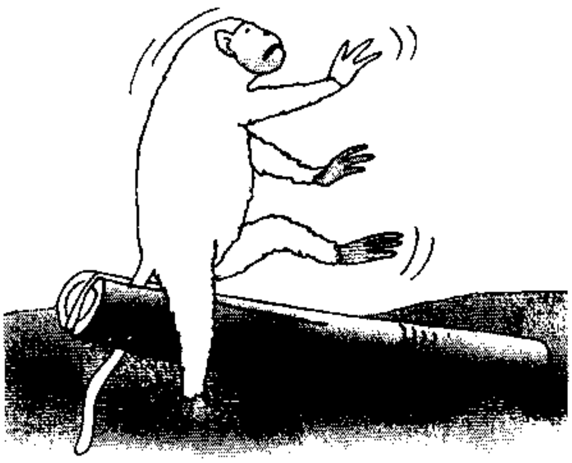

– श्री ब्रजनन्दन झा

# प्रश्न ओ अभ्यास

## 1. कथासँ

1. अरकसिया कतय छल ?
2. किल्ली कतय ठोकल छल ?
3. वानरक नाङरि कतय सन्हिया गेल ?
4. अरकसियाक अढ़ भेला पर वानर की करय लागल ?
5. वानरकेँ उकठपनाक की फल भेटलै ?
6. वानर कोन जातिक जानवर होइछ ?

## 2. पहिने की भेल, फेर की भेल

1. वानर किल्ली उपारय लागल । ☐
2. अरकसिया सभ वानरक पुछरी छपटि लेलक। ☐
3. अरकसिया सभ लकड़ी चिड़ैत छल । ☐
4. वनरबा लकड़ी पर सवार भय गेल । ☐
5. अरकसिया सभ खयबा-पीबाक हेतु जाइत गेल ।☐

## 3. की होइत जँ

वानरक सरदार किल्ली नहि उपारितथि ।

अरकसिया सभ वानरक सरदारक पुछरी नहि छपटि लैत ।

**4. नीचाँ लिखल शब्दकेँ लिखू । एहि सभकेँ बाजू ।**

गाछी, वानर, फाँक, काल, जावत, बसुला, फल, दल, हसुआ, बाल, मच्छी, फाँस, चाकर, तावत, बिहुला।

**5. अलग अलग घर नीचाँ बनाओल गेल अछि । घरमे देलगेल शब्दसँ मिलैत-जुलैत शब्द लिखू ।**

| चाल | काँख | पातर | सितुआ | काठी | जल |
|---|---|---|---|---|---|
| ......... | ......... | ......... | ......... | ......... | ...... |
| ......... | ......... | ......... | ......... | ......... | ...... |
| ......... | ......... | ......... | ......... | ......... | ...... |
| ......... | ......... | ......... | ......... | ......... | ...... |

**6. ककर चालि**

कहू एना के-के चलैत अछि ?

फुदकि-फुदकि कय ...............................................

कुदकि-कुदकि कय ...............................................

ससरि-ससरिकय ...............................................

**7. अहाँक बुझने जखन वानरक नाङरि छपटा गेल तखन**

ओ की सोचैत होयत ?

ओ तखन ककरा मोन पाड़ने होयत ?

सोचू, मोन पाड़ू

कथामे आयल 'खयबा-पीबा' सन आन शब्दकेँ ताकि कय लिखू

**खयबा -पीबा** ............................................

...............................................................................

नाङरि वला चारिटा पशुक नाम लिखू

अहाँक घरमे लकड़ीक कोन-कोन समान अछि, पाँचटाक नाम लिखू ?

अपना मोनसँ वर्गमे एकटा खिस्सा सुनाउ ।

## माने जानू

| | |
|---|---|
| उकट्ठी | - उपद्रवी |
| नाङरि | - पुछरी |
| अपस्याँत | - शक्तिसँ अधिक काज कयलाक बादक स्थिति । |
| अंश | - भाग |
| सरदार | - मुखिया |
| सन्हिया जायब | - पैसि जायब |

अढ़ – पैघ वस्तुक पाछू

बसुला – एहन औजार जाहिसँ लकड़ी छीलल जाइत छैक।

# 12

## पाकल आम

पाकल आम, पाकल आम,
चीखू, पाकल-पाकल आम ।

राजा, रंक सभ्य ओ लंठ,
सब समान खाइछ भरि कंठ,
कौआ कुकुरो खाय अघाय,
नहि किछु लागय कौड़ी-दाम ।
पाकल आम, पाकल आम ।

ठोहि पाड़ि कय चिन्नी कानय,
हा ! हमरा कुकुरो नहि मानय,
खाजा मुङबा नोर चुआबय
लैछ केओ नहि हमरो नाम !
पाकल आम, पाकल आम ।

तिमनक-[illegible] रहओ सँचार,
भात-दालि पर रहओ अँचार,
लड्डू, बरफी ओ पचमेर,
बैसल-बैसल गूड़थु झाम ।
पाकल आम, पाकल आम।

देखतहि उड़ि गेल होस-हबास
दही- दूध थिक एकर खबास,
जे रूचैत हो, जे पचैत हो
चोभू एकरा आठो याम ।
पाकल आम, पाकल आम ।

– गोविन्द झा

## प्रश्न ओ अभ्यास

**1. लकीरसँ जुड़ल अक्षरसँ नवका शब्द बनाउ**

पानि कल आइ मन

__________ __________

दहिना सही केश राजा

__________ __________

**2. नीचाँ लिखल शब्दसँ मिलैत जुलैत शब्दकेँ लिखू**

**जूट, सूट, रंक, लंठ, तब, कब**

| उँट | लंठ | जब |
|---|---|---|
| जूट | ...................... | ...................... |
| .............. | ...................... | ...................... |
| .............. | ...................... | ...................... |
| .............. | ...................... | ...................... |
| .............. | ...................... | ...................... |

**3. अक्षरक गप्प**

(अ) कवितामे "द" सँ शुरू होमयवला शब्द की सभ अछि ? ओकरा लिखू

(ब) प, क, आ स अक्षरसँ शुरू होमयवला शब्दकेँ चिन्हू आ लिखू।

(स) अहाँक नाम कोन अक्षरसँ शुरू भेल अछि ? ओहि अक्षरमेसँ चारि गोट शब्द लिखू ।

.......................................................................................................

.......................................................................................................

**4. कतेक आम**

एहि कवितामे कतेक वेर आम शब्द आयल अछि, लिखू।

........................................... बेर

छात्र लोकनि आपसमे विभिन्न प्रकारक आमक नामक चर्चा करथि ।
छात्र लोकनि एहि कविताकेँ वर्गमे सस्वर पाठ सुनाबथि ।

**5. नीचाँ देल गेल चित्रकेँ रंगू**

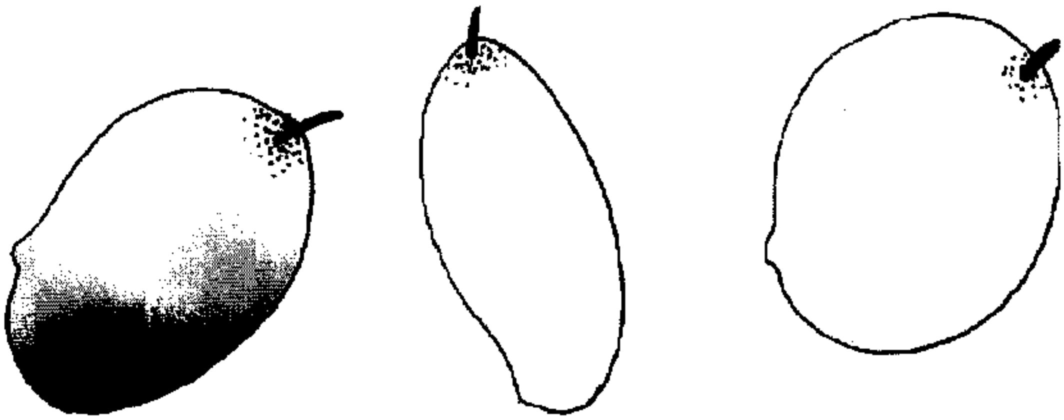

## माने जानू

| | | |
|---|---|---|
| रंक | – | निर्धन |
| लंठ | – | बदमाश |
| खबास | – | अनुचर |
| ठोहिपाड़ि | – | हबो ढकार भय कानब |

| | | |
|---|---|---|
| चीखू | – | खाकय देखब |
| पचमेर | – | पाँच तरहक मिठाई |
| चोभू | – | बिनु खोंइचा छोड़ैने आमकेँ चूसब । |
| झाम गुड़ब | – | व्यर्थमे बैसल रहब आ चिंता करब |

**योग्यता विस्तार**

अहाँक आस-पड़ोसमे कतेक प्रकारक आम भेटैत अछि ? नाम लिखू ?

आमकेँ कोन-कोन तरहेँ उपयोगमे अनैत छी ?

# 13

## आउ हमरा लोकनि आब अन्त्याक्षरी खेलाइ

आइ धरि हमरा लोकनि बहुत रास शब्द सीखि गेल छी । आब शब्दक अन्त्याक्षरी खेलाइ । अहाँ कतेक शब्द बना सकैत छी ? लिअ हमहीं शुरु कय दैत छी–

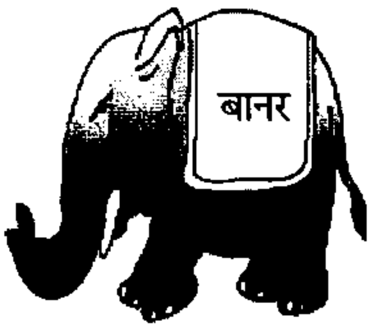

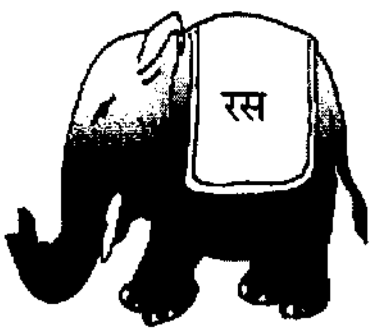


आब एहिसँ आगू अहाँ बाजू ने

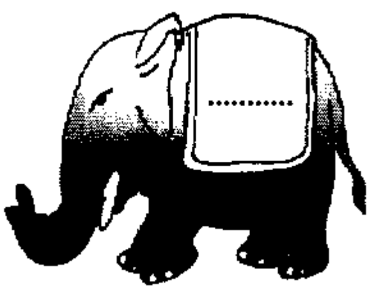
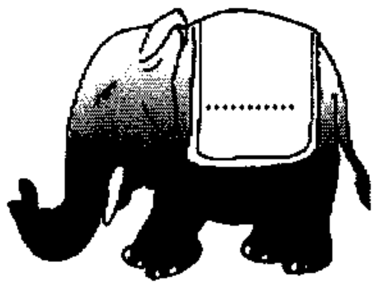
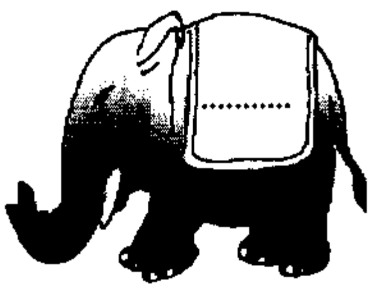

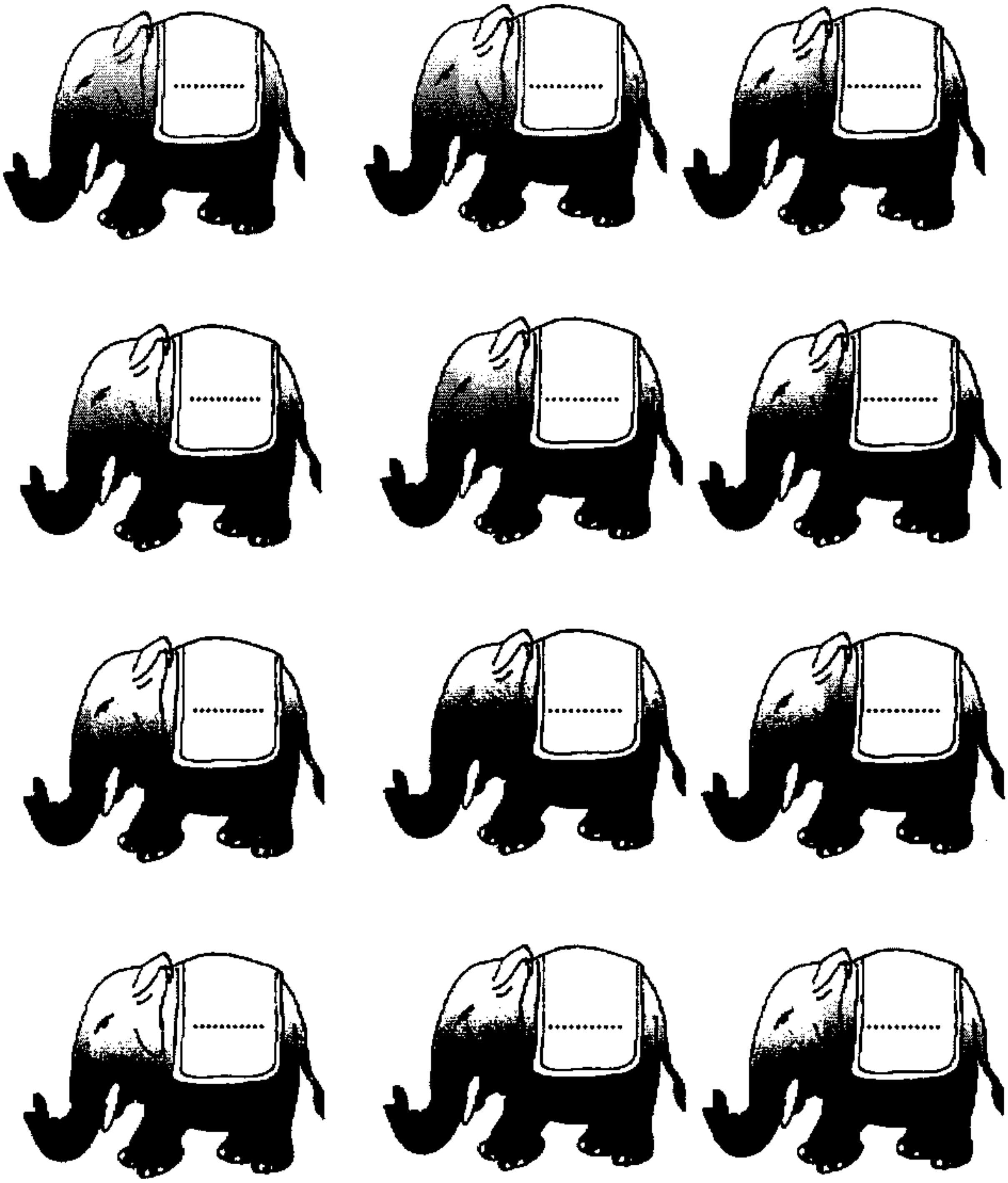

# 14

## मेलक बल

एक छल बूढ़ । ओकरा छलैक चारिटा बेटा । चारू बेटामे कखनहु सलाह नहि। एक ईर घाट तँ दोसर बीर घाट । सदिखन चारू अपनामे लड़ितहि रहैत छल । घरक काज- धंधा के देखत ? खेत-पथार के सम्हारत? ताहि सबसँ बूढ़ बेचारा चिन्तित रहैत छल । ओकर जिनगी कतेक दिनक छलैक ? पाकल आम छल । कखनहु खसि पड़ैत।

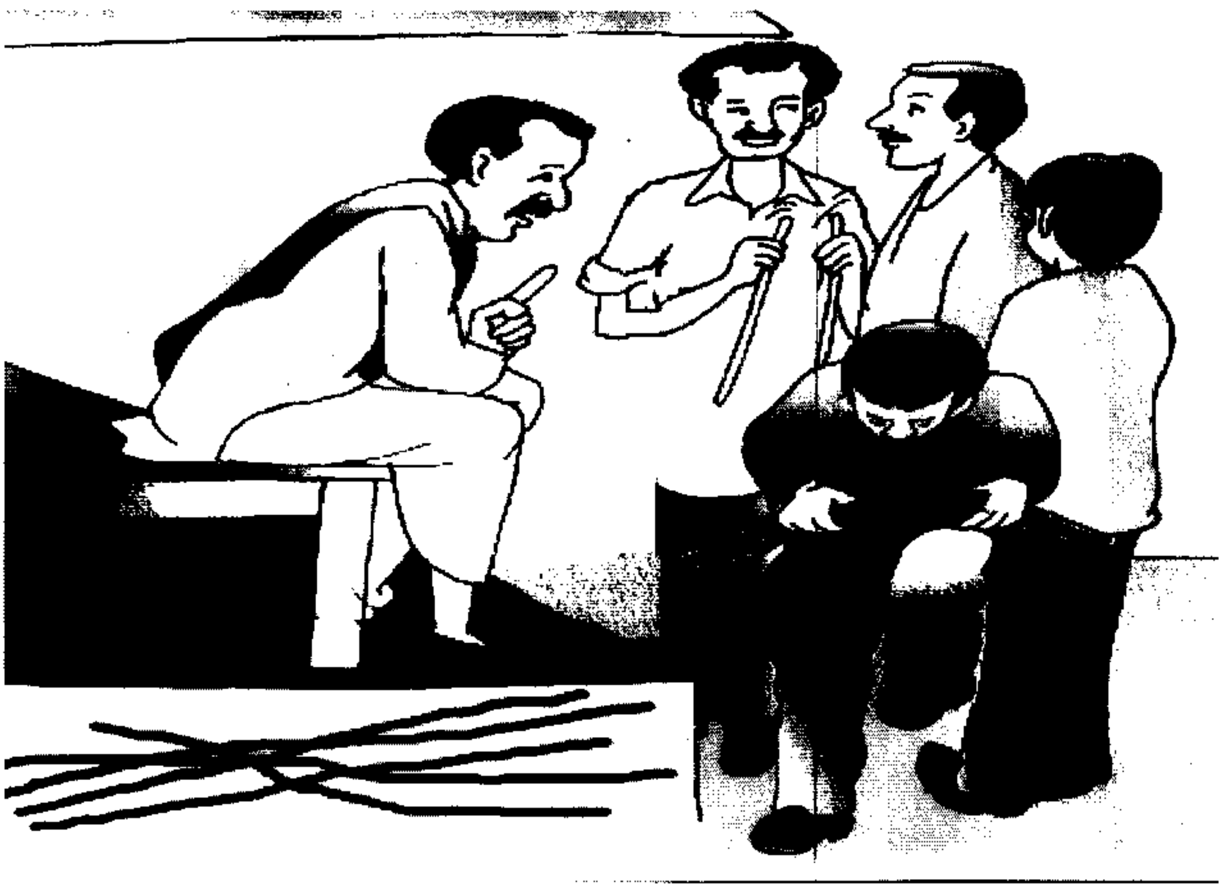

परन्तु तकरा बाद एहि चारू भाइक निर्वाह कोना होयतैक? यैह सब सोचि ओकर करेज फाटल जाइत छलैक ।

ओकरा एकटा युक्ति फुरलैक । ओ अपन चारू बेटाकेँ बजौलक । चारू बेटा आयल । बूढ़ चारूक हाथमे एक एकटा करची देलक । फेर ओकरा तोड़य कहलकैक। चारू बेटा चट-चट करची तोड़ि देलक ।

सभकेँ बूढ़क बुद्धि पर हँसी लगलैक ।

बूढ़ सभ टूटल करचीकेँ एकठाम जमा कयलक । ओकरा सभकेँ एक संग बान्हि देलक। एहि बान्हल करचीक मुट्ठाकेँ फेर एक-एकटा बेटाकेँ तोड़य कहलक ।

एतेक करचीकेँ एक बेरमे तोड़ब असम्भव छल । बेरा-बेरी सभ चेष्टा कयलक। ककरो बुतेँ करचीक मुट्ठा नहि टुटलैक ।

बूढ़ बाजल-देखलहक । एक एकटा करची तोँ सब चट-चट तोड़ि देलह । परन्तु जखन सभकेँ एक ठाम बान्हि देलिऐक तँ ककरो बुतेँ नहि टुटलह । एकसर रहने लोक कमजोर रहैत अछि । संग रहने बलगर । एक-एकटा खढ़केँ बीछि कय डोरी बनैत छैक तँ ओहिसँ हाथी बान्हल जाइत अछि । चारू बेटा बूढ़ बापक बातकेँ सूनि रहल छल । बूढ़ फेर बाजल-तोरा लोकनि मेलसँ रहबह तँ केओ नहि किछु बिगाड़तह । एकसर रहबह तँ कमजोर रहबह । सभ दबबैत रहतह । मेलमे बल छैक ।

ई बात चारू बेटाक मोनमे गड़ि गेलैक । चारू भाइ प्रेमपूर्वक रहय लागल ।

– शैलेन्द्र मोहन झा

# प्रश्न ओ अभ्यास

**1. एहि प्रश्नक उत्तर दिअ**

(क) बूढ़कें कतेक बेटा छलैक ?

(ख) बूढ़ कियैक चिन्तित रहैत छल ?

(ग) मेलसँ की भेटैत अछि ?

(घ) एहि कहानीसँ की शिक्षा भेटैत अछि ?

**2. मिलान करू**

| | |
|---|---|
| मेल | तोड़ब |
| पाकल | भाइ |
| चारि | बल |
| करची | आम |

**3. खाली जगहकेँ भरू**

बेटा, सलाह, बल, प्रेमपूर्वक

बूढकेँ चारिटा ........................ छल ।

बेटामे ........................ नहि छल ।

मेलमे ........................ अछि ।

चारू भाइ ........................ रहय लागल ।

**4. मिलल - जुलल शब्द बनाउ**

भ मैल

र ........................

त ........................

खा ........................

भ ........................

**5. वाक्य बनाउ**

मेल ..........................................

पाकल आम ..................................

करची ........................................

बुद्धि ........................................

**6. नीचाँ लिखल गेल शब्दक बदलामे दोसर शब्द दिअ**

सलाह – बूढ़ –

बेटा – लड़ाई –

डोरी – कमजोर –

**7. वाक्य बनाउ**

पाकल आम, करेज फाटब

# माने जानू

| | | |
|---|---|---|
| मेल | – | मिलान |
| बल | – | शक्ति |

# 15

## मछरी

पोखरिक पानि लगइए घोरल
ओहिमे चुभकि रहल अछि मछरी
चटा जाइए पानि पोखरिक
ओहिमे माछ कटइए घिघरी
भरल जलाशय भ्रमण करइए
बड़ा हर्ख सँ बन्हने पगड़ी

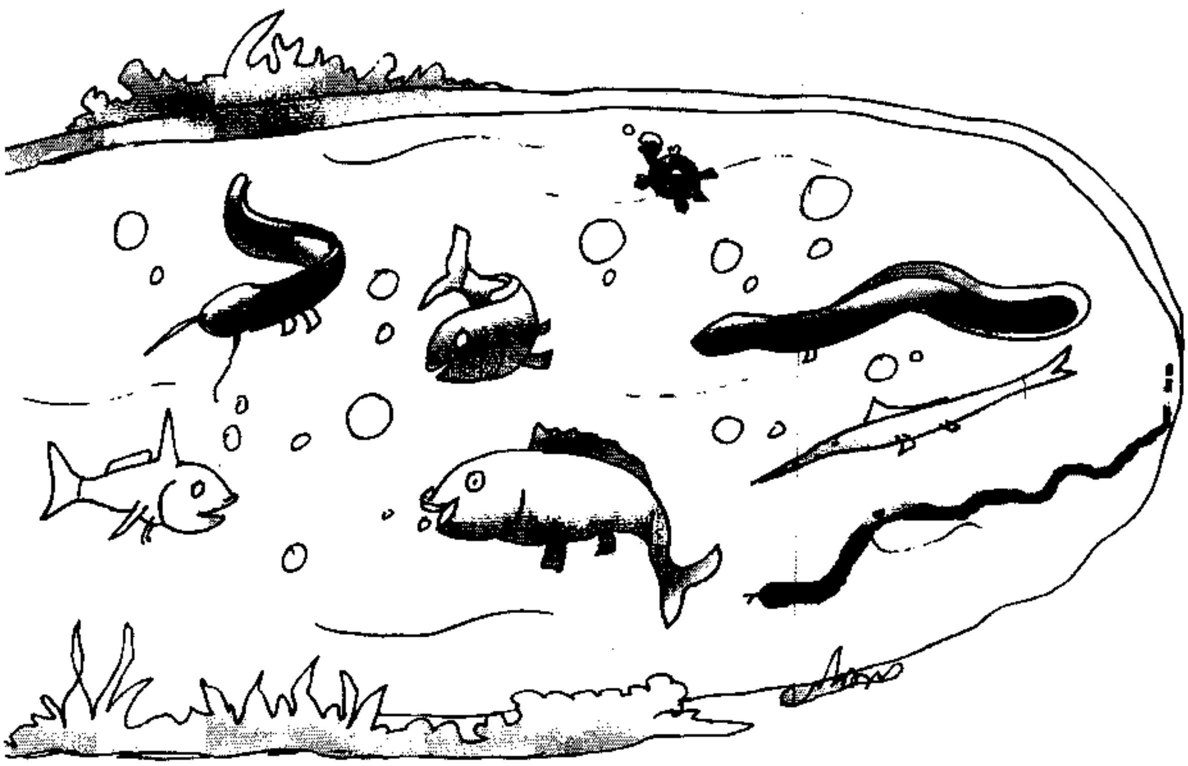

पानिक ऊपर थुथुन देखाबइ
कखनो झलका दइए पुछरी
रमकि रहल अइ छोट झुंडमे
ताकि रहल अइ खेरही अँकुरी
जखन हिलइए नाच रचइए
चाहइ दूर - दूर धरि ससरी
नहि चाहइए टंटा - बंटा
नहि चाहइए नोछरा - नोछरी
साफ पानि धरती पर अमरित
ओकरा साफ रखइए मछरी

– जीवकांत

## प्रश्न ओ अभ्यास

### 1. शब्दक मेल

नीचाँ देल गेल शब्दक आगू चारि-चारि शब्द देल गेल अछि । एहि चारूमेसँ एकटा शब्द बेमेल अछि । ओ कोन शब्द अछि ? ओ आन शब्दसँ अलग कियेक अछि ?

पानि, वर्षा, मेघ, दरभंगा

पोखरि, पानि, बाघ, माछ, जाइठ

माछ, मनुक्ख, वानर, गाय

**2. खाली जगहकें भरू**

पोखरिक ........................................ लगइए घोरल

ओहिमे चुभकि रहल अछि ...................

चटा जाइए पानि ....................

ओहिमे ............................ कटइए घिघरी

**3. वाक्य बनाउ**

पानि

माछ

साफ

धरती

**4. चित्रकेँ रंगू**

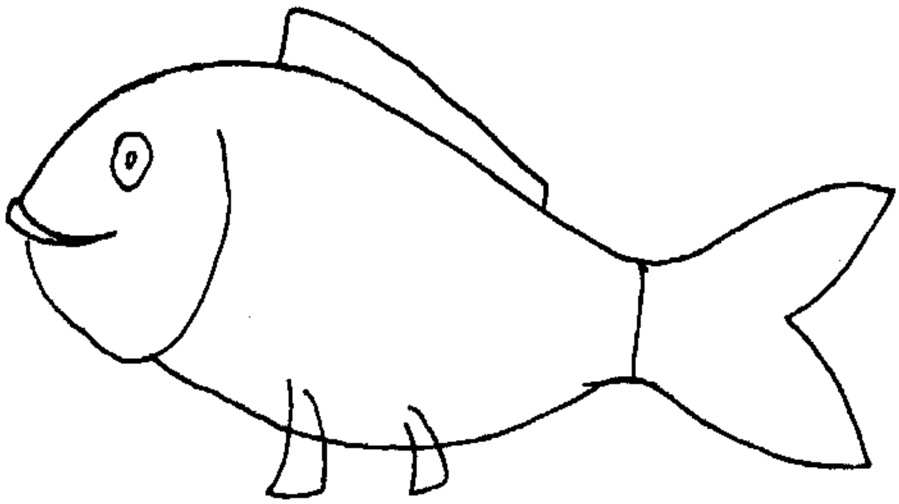

5. **चारि तरहक माछक नाम लिखू**

.............. .................... .................. ..................

6. **पेटक भरे चलनिहार तीन जन्तुक नाम लिखू**

.............. .................... .................. ..................

7. **पोखरिक पानिमे रहनिहार तीन जन्तुक नाम लिखू**

.............. .................... .................. ..................

8. **माछ पानिकेँ कोना साफ करैत अछि, विचार करू ।**

## माने जानू

| | | |
|---|---|---|
| अमरित | – | अमृत |
| जलाशय | – | पोखरि |
| भ्रमण | – | घूमब |
| चुभकि | – | हाथ पयर पटकि कय नहायब |
| थुथुन | – | मुँहक आगूक भाग |

| | | |
|---|---|---|
| झुंड | – | समूहमे, दू चारि एक साथ |
| चटा जायब | – | सुखा जायब |
| हर्ख | – | खुशी |
| पुछरी | – | नाङरि |
| खेरही | – | मूंग |
| ससरी | – | पेटक भरे चलब । |
| टंटा - बंटा | – | झगड़ा-दनि |
| नोछरा-नोछरी | – | नोक-झोंक |
| घिघरी | – | छटपटायब |

# 16

## चित्रात्मक कथा

### गोनू झाक महींस

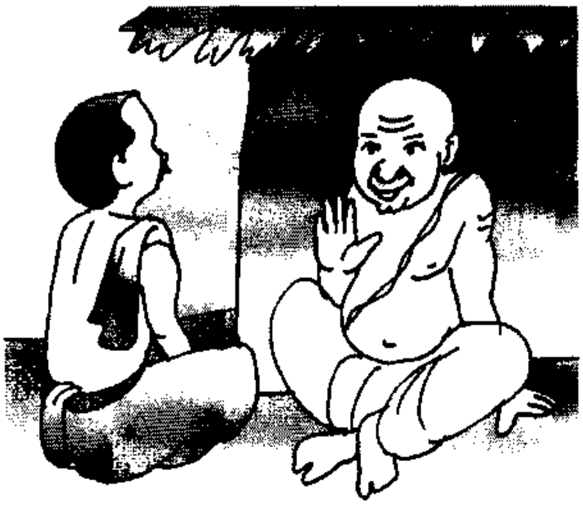

गोनू झा भोनू झा दू भाइ प्रेमपूर्वक रहैत छलाह ।

ग्रामीण लोकनिकेँ ई बात नीक नहि लगलनि। आ आपसमे झगड़ा होइन से उपाय सोचय लगलाह ।

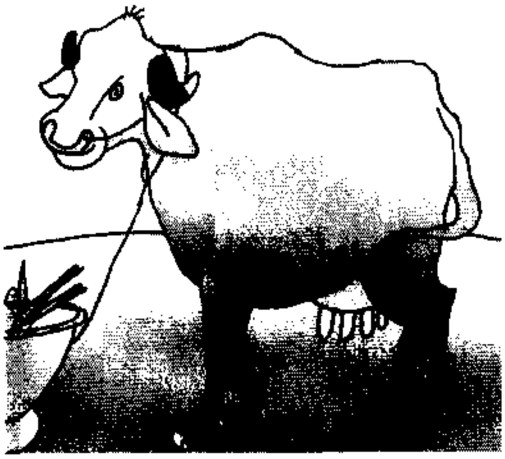

भाइ दू आ महींस एक बँटवारा होयत कोना ?

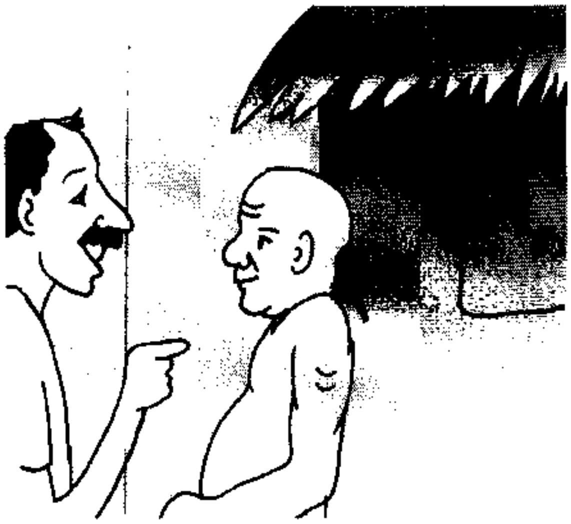

दुनू भाइमे मतान्तर बढ़य लागल

छोट-छोट बात लय कय झगड़ा होमय लगलनि।

पंचैतीक लेल गामक लोक सभ बैसलाह।

दुनू भाइ अपन-अपन बात कहलनि।

पंचैतीमे निर्णय भेल जे महींसक अगिला भाग गोनू झाक भेलनि आ पछिला भाग भोनू झाक।

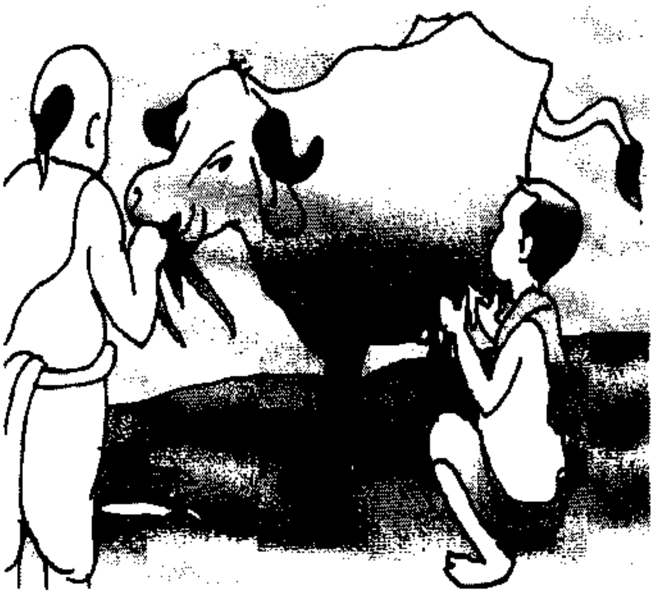

गोनू झा महींसकेँ खूब खोआबथि आ भोनू झा महीसकेँ खूब दूहथि।

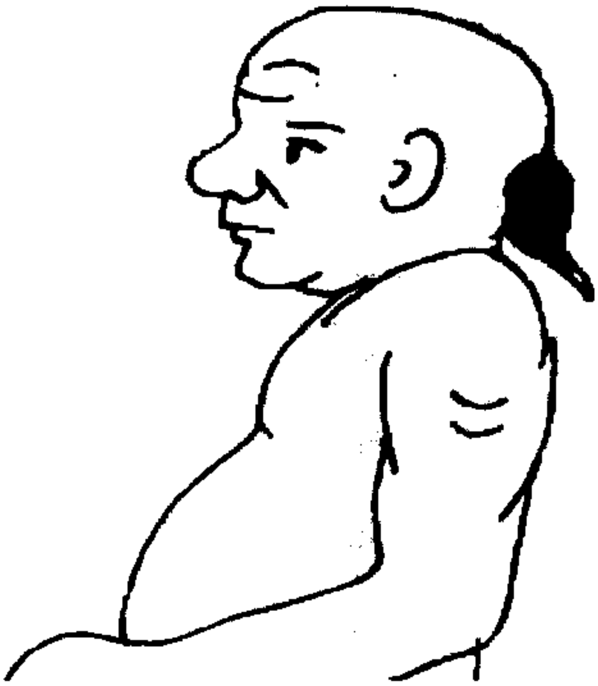

ई बात आर अधलाह लागय लगलनि, गोनू झाकेँ ।

गौआँ सभ गोनू झाक संग काना-फूसी करय लगलनि।

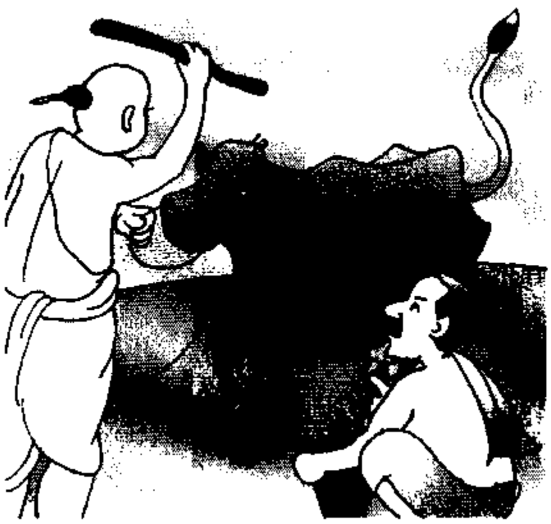

एक दिन भोनू झा महींसकेँ दूहय लगला आ तखने गोनू झा महींसकेँ डेंगाबय लगला।

महींस दूध नहि देलक । भोनू झा चिंतित भय गेलाह।

गोनू झा एहन काज लगातार दू-चारि दिन कयलनि ।

पुनः पंचैती भेल । आइ भोनू झा खिसिया कय पंचकेँ सभ बात कहलनि।

पंच लोकनि मुँह देखि मुँगबा परसने रहथि। तकर अनुभव भेलनि।

पुनः पंच लोकनि निर्णय लेलनि दुनू गोटे महींसकेँ खुऔता आ दूध बँटवारा बराबरि-बराबरि करताह ।

दुनू भाइ पंचक निर्णय मानि लेलनि आ पुनः प्रेम पूर्वक रहय लगलाह।

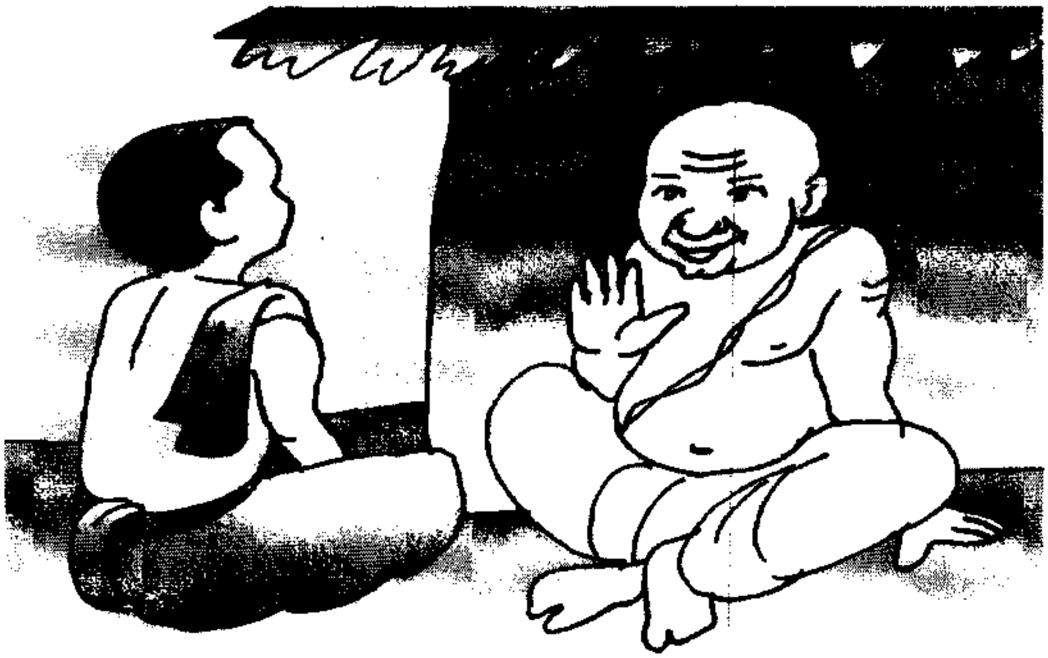

# शब्द कोश

| | | |
|---|---|---|
| अपस्याँत | – | शक्ति सँ अधिक श्रम कयलाक वादक स्थिति। |
| अवसान | – | मृत्यु |
| आशीष | – | आशीर्वाद |
| अंश | – | भाग |
| अढ़ | – | पैघ वस्तुक पाछू |
| अनबूझ | – | बिनु बुझने |
| अमरित | – | अमृत |
| अजगुत | – | आश्चर्यजनक |
| अकाल | – | पानि नहि भेला परक स्थिति |
| अधलाह | – | खराब |
| उकट्ठी | – | उपद्रवी |
| उजारब | – | नोचि-नाचिक फेकब |
| ईर्षा | – | डाह, दोसरक नीक नहि देखब |
| कल | – | कारखाना, एहन घर जाहिमे विभिन्न प्रकारक मशीन रहैक आ उत्पादन होइक |
| खबास | – | अनुचर |
| खेरही | – | मूंग |
| घिघरी | – | छट-पटायब |
| घृणा | – | खराब दृष्टिसँ देखल |

| | | |
|---|---|---|
| चीखू | – | खा कय देखब |
| चुभकि | – | हाथ–पयर पटकिक नहायब |
| चोभू | – | बिनु खोंइचा छोड़ौने आमकेँ चूसब |
| जंगल | – | जाहि ठाम गाछ–वृक्ष अनगिनत रहय |
| जग | – | संसार |
| जिज्ञासा | – | जानबाक इच्छा |
| जमाय | – | बेटीक पति |
| जलाशय | – | पोखरि |
| झुंड | – | समूहमे, दू चारि एक साथ |
| झाम गूड़ब | – | व्यर्थमे बैसल रहब आ चिन्ता करब |
| झुम्मरि | – | समूहमे झुमि–झुमि कय गायब |
| टंटा–बंटा | – | झगड़ा दनि |
| तपस्या | – | भगवान केँ प्राप्त करय वास्ते तल्लीन करब |
| थुथुन | – | मुँहक आगुक भाग |
| ठोहि पाड़ि | – | हबो ढकार भय कानब |
| द्वेष | – | दुश्मनी |
| दहन | – | जरब |
| धवल | – | इजोरिया, उज्जर |
| निज | – | अपन |
| नाड़रि | – | पुछरी |

| | | |
|---|---|---|
| नोछरा–नोछरी | – | नोक–झोंक |
| पैघ | – | नम्हर |
| पंडित | – | विद्वान् |
| प्रचलित | – | चलनसारी |
| प्रातःकाल | – | परातभेने, दोसर दिन |
| प्रतिवर्ष | – | सभ साल |
| पचमेर | – | पाँच तरहक मिठाई |
| पौराणिक | – | पुरानसँ सम्बन्धित |
| पिहानी | – | जकर अर्थ फडिछायल नहि होइक, बुझौअलि। |
| प्रज्ज्वलित | – | नीक जकाँ पजरल, धधकैत |
| बसुला | – | एहन औजार जे लकड़ी छिलयमे उपयोग कयल जाइत अछि । |
| बुन्नी | – | बर्षाक छोट बुन्द |
| बल | – | शक्ति |
| भक्त | – | भक्ति कयनिहार |
| भाल | – | (माथक अगिलका भाग) माथ |
| भ्रमण | – | घूमब |
| मनुक्ख | – | आदमी |
| मातृभाषा | – | मायसँ सीखल भाषा |
| मनोहर | – | सुन्दर |

| | | |
|---|---|---|
| मैथिल | – | मिथिलावासी |
| मिथिला | – | मैथिल बहुल क्षेत्र (जतय मैथिली भाषा बाजल जाइत अछि) |
| मेल | – | मिलान |
| यत्न | – | प्रयास |
| रंक | – | निर्धन |
| लेसब | – | जरायब |
| लंठ | – | बदमाश |
| वचन | – | बोली |
| व्यर्थ | – | बेकार |
| विश्व | – | संसार |
| शोभा | – | सुन्दर |
| शोणित | – | रक्त |
| शक्तिशाली | – | ताकतवर |
| सरदार | – | मुखिया |
| सन्हिया जायब | – | घुसि जायब, पैसि जायब |
| ससरी | – | पेटक भरे चलब |